**ओ३म्**

**-आर्यसमाज धामावाला देहरादून का 138 वां वार्षिकोत्सव-**

**“वैदिक धर्म हमें इस लिए प्रिय है कि यह कर्म फल सिद्धान्त के अनुसार पाप**

**कर्मों को अक्षम्य मानता हैः डा. ज्वलन्तकुमार शास्त्री”**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

आर्यसमाज धामावाला देहरादून के वार्षिकोत्सव के दूसरे दिन 25 नवम्बर, 2017 को सायंकालीन सत्र में सुप्रसिद्ध आर्य विद्वान डा. ज्वलन्तकुमार शास्त्री जी का प्रवचन हुआ। उन्होंने कहा कि हमने जो शुभ व अशुभ कर्म किये हैं उनके फल हमें अवश्य ही भोगने पड़ेंगे। उन्होंने शास्त्रीय प्रमाण देकर कहा कि यदि कोई गोपनीय बात 6 कानों में चली जाये तो वह गोपनीय नहीं रहती। गोपनीय बात दो व्यक्तियों के चार कानों तक ही सीमित रहे तभी गोपनीय रहती है। 6 कानों का तात्पर्य तीन व्यक्तियों के 6 कानों में किसी गोपनीय बात का जाना है। आचार्य चाणक्य का उल्लेख कर उन्होंने कहा कि राज्य विषयक गोपनीय बात राजा और प्रधानमंत्री के मध्य ही रहनी चाहिये। राजा अपनी धर्मपत्नी तक को गोपनीय बातें न बतायें ऐसा उल्लेख आर्य ग्रन्थों में मिलता है।

आचार्य डा. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी ने कहा कि हम कोई कार्य कितना ही छिपकर व गोपनीय रूप से क्यों न करें वह परमात्मा से छिपा नहीं रहता। परमात्मा हमारे सभी कर्मों का साक्षी है और अपनी सर्वव्यापकता से वह हमारे प्रत्येक मानसिक, वाचिक और कृत कर्मों को जानता है। उन्होंने कहा कि परमात्मा से हमारे मानसिक पाप व पुण्य भी छिपे नहीं रहते। उसे वह सब विदित होते हैं। आचार्य जी ने न्याय शास्त्र के उस नियम की भी चर्चा की जिसके अनुसार साक्ष्य के अभाव में भले ही 100 अपराधी छूट जायें परन्तु एक निर्दोष व निरपराधी व्यक्ति दण्डित नहीं होना चाहिये। उन्होंने इस न्याय शास्त्र के सिद्धान्त पर प्रकाश डाला। परमात्मा के न्याय से कोई व्यक्ति लाख प्रयत्न करने पर भी छूट नहीं सकता। किसी मत प्रवर्तक और उसके अनुयायी के भी पाप ईश्वर द्वारा क्षमा नहीं किये जाते। उन्हें भी अपने मिथ्या व पाप कर्मों का फल ईश्वर देता है। ऐसा इसलिए होता है कि ईश्वर प्रत्येक जीवात्मा व प्राणी के कर्मों का साक्षी है तथा सृष्टि में मनुष्यादि योनि में उत्पन्न मनुष्य व मतप्रर्वतक भी ईश्वर की दृष्टि में मतप्रवर्तक न होकर एक साधारण मनुष्य ही होते हैं। आचार्य जी ने कहा कि जब संसार के सभी लोग कर्मफल सिद्धान्त के इस महत्वपूर्ण विधान को स्वीकार कर लेंगे कि हमें हमारे प्रत्येक कर्म का फल अवश्य ईश्वर से मिलेगा तभी संसार से पाप समाप्त हो सकते हैं।

आचार्य जी ने वाराणसी में लगे सरकारी विज्ञापनों पर भी व्यंग किया जिसमें लिखा गया था कि ‘गंगा में पाप धोये मल नहीं’। आचार्य जी ने इस पंक्ति को सिद्धान्त की दृष्टि से गलत बताया और इसकी आलोचना की। सिरडी के साई बाबा की चर्चा कर आचार्य जी ने कहा कि लोग बड़ी संख्या में अपने पापों को दूर करने के लिए वहां जाते हैं। आचार्य जी ने कहा कि शंकराचार्य जी ने इस मिथ्या विश्वास की आलोचना करने का साहस दिखाया परन्तु इसका परिणाम यह हुआ कि वहां पहले से अधिक लोग जाने लगे और वहां चढ़ावे में भी भारी वृद्धि हुई। आचार्य जी ने बताया कि देश व विश्व में कर्म के फल का ईश्वरीय दण्ड सबको अवश्य मिलेगा, इस यथार्थ सत्य का कोई प्रचार नहीं कर रहा है जिससे पाप बढ़ रहे हैं। आचार्य जी ने पाखण्डों की चर्चा की और विस्तार से उन पर सारगर्भित प्रकाश डाला। डा. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी ने कहा कि यह मिथ्या विश्वास है कि जो महाभागवत की कथा सुनता व कराता है उसके पाप कट जाते हैं। आचार्य जी ने सुप्रसिद्ध फिल्मी अभिनेता राज कपूर का उल्लेख कर बताया कि एक बार किसी पत्रकार ने उनसे पूछा कि तुम्हें अपना हिन्दू धर्म क्यों प्यारा है? राजकपूर जी ने इसके उत्तर में सत्य बात कही कि मुझे अपना हिन्दू धर्म इस लिए प्यारा है क्योंकि यह बताता है कि हमारे सारे सुख व दुख हमारे ही किये हुए कर्मों का परिणाम होते हैं। ईश्वर हमारे पापों का दण्ड हमारे सुधार के लिए हमें देता है। आचार्य जी ने बताया कि एक बार वाराणसी में राजकपूर जी को सड़क पर बैठा एक कोढ़ी मिला जो भीख मांग कर अपना निर्वाह करता था। उसके दोनों हाथ व पैर नहीं थे। कोढ़ से उसका शरीर गल गया था। उसका पूरा शरीर कोढ़ से हर स्थान पर ग्रस्त था। साथी उसको उठाते और बैठाते थे। उसके शरीर पर मक्खियां भिनभिनाती थी। राज कपूर जी को उस पर दया आयी। वह उसके पास पहुंचे। उससे पूछा कि भाई तुम्हें इतना अधिक कष्ट है। क्या तुम्हारे मन में कभी यह विचार नहीं आता कि मैं इस भागीरथी नदी में कूद कर अपनी जान दे दूं और इस जन्म के दुःखों से मुक्ति पा लूं? राज कपूर जी का प्रश्न सुनकर वह व्यक्ति बोला कि बाबू साहब! मैंने जो पूर्व जन्म में पाप किये हैं उनका फल मैं इस जन्म में भोग रहा हूं। मैं चाहता हूं कि मैं इस जन्म में अपने पुराने सभी बुरे कर्मों का फल भोग लूं। जहां तक आत्महत्या का प्रश्न है, यह तो मैं सेच भी नहीं सकता। इसलिये कि यह भी एक बुरा कर्म है और हो सकता है कि ऐसा करने पर मुझे इस जन्म से भी ज्यादा दुःख अगले जन्म में भोगने पड़ेगे। इसलिए मैं इस जघन्य पाप को करने की बात कभी सोचता नहीं। यह उत्तर सुन कर राजकपूर जी को प्रसन्नता हुई और उन्होंने अनुभव किया कर्म फल विधान व पापों के दण्ड के विधान के कारण मेरा हिन्दू धर्म बहुत प्यारा धर्म है। आचार्य जी ने बताया कि ‘राम तेरी मंगा मैली’ फिल्म में राजकपूर जी ने इस कर्म फल विधान को दर्शाया था।

आचार्य ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी ने कहा कि आस्तिकता लंगड़ी है जब तक की कर्म फल सिद्धान्त और पूर्वजन्म, पुनर्जन्म और परजन्म सिद्धान्तों का प्रचार न किया जाये। आचार्य जी ने कहा कि वैदिक धर्म में सन्ध्या करने की पद्धति भी अति प्राचीन है। ऋषि दयानन्द ने सन्ध्या पद्धति लिखकर हमें पुनः उसका परिचय कराया है। आचार्य जी ने अघमर्षण के तीन मन्त्रों को प्रस्तुत कर उनकी विस्तृत व्याख्या की। आचार्य जी ने उदाहरण देकर समझाया कि यह सृष्टि प्रवाह से अनादि व अनन्त है। उन्होंने सलाह दी कि हम कभी किसी के प्रति द्वेष भाव न रखें। आचार्य जी ने मनसा परिक्रमा के 6 मन्त्रों को प्रस्तुत कर उनकी भी व्याख्या की। आचार्य जी ने कहा कि वेद आध्यात्मिक और भौतिक विद्याओं का ज्ञान कराता है। उन्होंने कहा कि नवजात शिशुओं में स्तनपान करने का ज्ञान व प्रवृत्ति उनके पुनर्जन्म को सिद्ध करती है ओर बताती है कि उन्होंने अपने पूर्व के अनेक जन्मों में अनेक माताओं का स्तनपान कर रखा है। आचार्य जी ने कहा कि हम पाप करते हैं परन्तु ईश्वर कभी कोई पाप नहीं करता। उन्होंने कहा कि जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है और उसके फल भोगने में ईश्वर की व्यवस्था के अधीन वा परतन्त्र है। इसी के साथ आचार्य ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी ने अपने वक्तव्य को विराम दिया।

आर्यसमाज के प्रधान डा. महेश चन्द शर्मा जी ने आचार्य जी को सुन्दर, ज्ञानवर्धक व उपयोगी प्रवचन प्रस्तुत करने के लिए धन्यवाद दिया और उनकी भूरि भूरि प्रशंसा की। इसके बाद आर्यसमाज के पुरोहित श्री विद्यापति शास्त्री जी ने शान्ति गीत गाया और शान्ति पाठ से सत्र का अवसान किया। कार्यक्रम का आरम्भ सायं 3.30 बजे यज्ञ से हुआ था। यज्ञ के अनन्तर बिजनौर के आर्य विद्वान श्री मोहित शास्त्री जी के मनोहर प्रभावशाली भजन व गीत हुए। श्रोताओं ने पूरे कार्यक्रम का भरपूर आनन्द लिया। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

**ओ३म्**

**-आर्यसमाज का 138 वां वार्षिकोत्सव सोत्साह आरम्भ-**

**“ऋषि दयानन्द भारत को ऋषियों का देश बनाना**

**चाहते थे : डा. ज्वलन्त शास्त्री”**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

आर्यसमाज धामावाला देहरादून का 138वां वार्षिकोत्सव आज प्रातः सोल्लास आरम्भ हुआ। उत्सव को सफल बनाने के लिए डा. ज्वलन्तकुमार शास्त्री जी अमेठी से पधारे हैं। स्वामी विदेह योगी जी कुरुक्षेत्र से पधारे हैं। भजनों से सेवा देने के लिए श्री मोहित शास्त्री जी उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिले से आये हैं। उनके साथ ढोलक पर उन्हें श्री रणधीर सिंह जी संगति दे रहे हैं। आर्यसमाज के पुराने व वर्तमान सभी सदस्य आज उत्सव के पहले दिन आयोजन में पहुंचे। प्रमुख विद्वान व्यक्तियों में डा. नवद्वीप कुमार जी, सेवानिवृत विभागाध्याक्ष राजनीति विभाग, दयानन्द आर्य वैदिक स्नात्कोत्तर महाविद्यालय, देहरादून एवं काशीपुर के पीजी कालेज के संस्कृत विभागाध्यक्ष डा. लक्ष्मीचन्द शास्त्री भी थे। श्री श्रद्धानन्द बाल वनिता आश्रम, देहरादून के बालक व बालिकायें भी उत्सव में सम्मिलित हुए।

 आज प्रातः 8.00 बजे आर्यसमाज के विद्वान व गायन में प्रवीण पुरोहित जी पं. विद्यापति शास्त्री के पौरोहित्य में यज्ञ हुआ। यज्ञ के बाद ध्वजारोहण हुआ। इस अवसर पर आर्यसमाज के प्रधान डा. महेश चन्द शर्मा जी सहित आर्य विद्वानों ने श्रोताओं को सम्बोधित किया और वैदिक धर्म की महत्ता पर प्रकाश डाला। घ्वजारोहण के बाद आर्य भजनोपदेशक श्री मोहित शास्त्री जी के मन को आकर्षित एवं प्रभावित करने वाले कई भजन बहुत सुरीली व मधुर आवाज में हुए। उनका एक भजन था ‘ईश्वर का गुणगान किया कर कष्ट और क्लेश मिटाने को। जीव को यह नाव मिली है भवसागर तर जाने को।।’ यह भजन बहुत ही प्रभावशाली रूप से गाया गया जिससे श्रोता मन्त्रमुग्ध हो गये। मोहित जी ने एक अन्य भजन गाया जिसकी एक पंक्ति थी ‘तुम्ही बताओं कि फिर ध्यान क्या करे’। विद्वान भजनोपदेशक ने भजन के अनन्तर कहा कि नेकी बदी को रास्ता दिखाती है। उन्होंने कहा कि जिस मनुष्य का मन चंचल है उसका ध्यान कैसे लग सकता है? ऐसा मनुष्य तो व्यापार व धन प्राप्ति का ही चिन्तन करता रहता है? मोहित जी ने कहा कि मनुष्य इतना गिर गया है कि यह मांस, मच्छी, अण्डा आदि सब कुछ खा लेता है जबकि शेर घांस नहीं खाता और गाय मांस किसी भी स्थिति में नहीं खाती। वह खायेगी तो धांस व वनस्पतियां ही। उन्होंने कहा कि ईश्वर के आनन्द को वाणी से व्यक्त नहीं किया जा सकता। इसके बाद उन्होंने भक्त कवि अमींचन्द जी का सुप्रसिद्ध भजन सुनाया जिसके बोल थे ‘तुम्हारी कृपा से जो आनन्द पाया वाणी से जाये व क्यों कर बताया।’

 मुख्य प्रवचन आर्यजगत के शीर्षस्थ विख्यात विद्वान डा. ज्वलन्तकुमार शास्त्री जी का हुआ। अपने व्याख्यान के आरम्भ में विद्वान वक्ता ने भक्त अमीचन्द जी की चर्चा की। ऋषि दयानन्द जिन दिनों पंजाब के झेलम जिले में प्रचार कर रहे थे, वहां भक्त अमीचन्द जी भी आते थे और व्याख्यान से पूर्व ऋषि दयानन्द से अनुमति मांगकर भजन प्रस्तुत करते थे। अमीचन्द जी भजन अच्छा लिखते भी थे और गाते भी थे। अतः स्वामी दयानन्द जी ने प्रथम दिन भजन सुनकर उनकी बहुत प्रशंसा की। आयोजकों को यह अच्छा नहीं लगा। कारण था कि अमीचन्द जी जमींदार थे। वह विषयों का सेवन करते थे। घर पर वैश्या रखी हुई थी। अपनी पत्नी को घर से निकाल दिया था। मांसाहारी व मद्यपायी थे। आयोजकों ने ऋषि को अमीचन्द जी की इन बुराईयों को बताया। अगले दिन ऋषि के प्रवचन से पूर्व अमीचन्द जी पुनः आये और ऋषि से भजन गाने की अनुमति मांगी। ऋषि ने अमीचन्द को गौर से देखा और बोले कि अमीचन्द! तुम हो तो हीरे परन्तु कीचड़ में पड़े हुए हो। ऋषि के यह वचन सुनकर अमीचन्द जी ने कहा वह कीचड़ से निकलकर हीरा बन कर दीखायेंगे। वह वहां से चले गये और घर आकर अपनी शराब की बोतलों को तोड़ डाला। पत्नी के मायके जाकर उनसे क्षमा मांगी और उन्हें साथ ले आये। आहार व जीवन सब शुद्ध कर लिया और आर्यसमाज के प्रथम प्रसिद्ध भजनोपदेशक बने जिनके भजन आज भी जनता में लोकप्रिय हैं। आचार्य ज्वलन्तकुमार शास्त्री जी ने कहा कि भजनोपदेशक मोहित जी ने अमीचन्द जी का जो भजन गाया था उसमे श्लेष अलंकार था। श्लेष का अर्थ होता है कि एक बात के कम से कम दो अर्थ निकलना। विद्वान वक्ता ने कहा कि भजन के शब्दों में मेरा जीवन ने पलटा खाया, आनन्द व दया शब्दों में श्लेषांकार है।

 डा. ज्वलन्तकुमार शास्त्री जी ने कहा कि ऋषि दयानन्द ने अपने उपदेशों व लेखन में ऋषियों के विचारों की ही चर्चा की है। ऋषि दयानन्द भारत को ऋषियों का देश बनाना चाहते थे। ऋषि दयानन्द का प्रिय वाक्य था **‘ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्त’।** उन्होंने कहा कि ब्रह्मा जी वह ऋषि हैं जिन्हें सृष्टि के आरम्भ में चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा से चार वेदों का ज्ञान मिला था। इन चार ऋषियों को सीधे परमात्मा से ज्ञान मिला था। विद्वान वक्ता ने बताया कि जैमिनि मुनि ने पूर्व मीमांसा ग्रन्थ लिखा है। इसके बाद ऋषियों की परम्परा समाप्त हो गई। उन्होंने प्रश्न किया कि जब परम्परा विछिन्न हो गई तो दयानन्द जी ऋषि कैसे हुए? इसका उत्तर उन्होंने यह कह कर दिया कि ऋषि दयानन्द का सम्बन्ध वेद से है। उन्होंने कहा कि ज्ञानी, विद्वान, पंडित, मुनि आदि तो बहुत हो सकते हैं परन्तु ऋषि वह होता है जो समाधि अवस्था में ईश्वर का साक्षात्कर कर वेद मंत्रों के अर्थों व रहस्यों का ज्ञान प्राप्त करता है। डा. ज्वलन्त जी ने विपुल वैदिक साहित्य की चर्चा की और कहा कि ऋषि केवल वेदों पर आधारित रचनायें ही करते हैं इतर विषयों पर नहीं। आचार्य ज्वलन्त जी ने वेदभाष्यकार सायण एवं अन्यों की भी चर्चा की। उन्होंने प्रश्न किया सायण को ऋषि क्यों स्वीकार नहीं किया जाता? उन्होंने कहा कि इसका कारण है कि उन्होंने वेदों के प्रति उल जलूल बातें लिखी हैं जो सत्य न होकर उनके अज्ञान को प्रकट करती हैं। इसी कारण सायण आदि अन्य विद्वान ऋषि नहीं है। इन लोगों की श्रद्धा तो वेदों पर थी परन्तु यह वेदों के यथार्थ अथ नहीं जान सके। आचार्य ज्वलन्त जी ने कहा कि सायण आदि अनेक विद्वानों की मान्यतायें मिथ्या हैं। सायण आदि विद्वान वेदों में इतिहास व पशुहिंसा का भी समर्थन करते हैं।

 डा. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी ने कहा कि ऋषि दयानन्द विद्या विषयक सभी दुर्गुणों से सर्वथा रहित हैं। उनका जीवन आदर्श है। आर्यसमाज के विद्वान डा. गंगा प्रसाद उपाध्याय की चर्चा कर उन्होंने कहा कि लोग पहले भी अष्टाध्यायी, महाभाष्य और निरुक्त ग्रन्थों को पढ़ते थे परन्तु जैसा ऋषि दयानन्द ने इन ग्रन्थों को पढ़ा वैसा इनसे पूर्व मध्याकालीन विद्वानों ने नहीं पढ़ा। उन्होंने कहा कि निरुक्त यह घोषणा करता है कि वेद के सभी शब्द यौगिक हैं जबकि सायण आदि वेद के शब्दों को यौगिक व रूढ़ दोनों मानते हैं। निरूक्त की मान्यता का पालन केवल ऋषि दयानन्द जी ने ही किया है। अन्य पूर्ववर्ती विद्वानों ने निरुक्त के वचनों की उपेक्षा की है। डा. ज्वलन्तकुमार शास्त्री जी ने आर्यसमाज समाज के विद्वान पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी की चर्चा कर कहा कि उनके समय में उनके समान विद्वान पूरी धरती पर नहीं था। वह मेरे गुरु थे। डा. विद्यानिवास मिश्र का उल्लेख कर उन्होंने बताया कि मीमांसक जी की मृत्यु होने पर उन्होंने मीमांसक जी पर अपने राष्ट्रीय दैनिक पत्र में सम्पादकीय लिखा था। यह गौरव अन्य किसी संस्कृत विद्वान को नहीं मिला है। महर्षि दधिची की चर्चा कर आचार्य जी ने कहा कि पं. मीमांसक उनकी तरह ही ऐसे विद्वान ब्राह्मण थे जिन्होंने संस्कृत वा वैदिक भाषा व साहित्य की उन्नति व उद्धार के लिए अपनी हड्डिया गला दी थी। उन्होंने बताया कि उन्हें आर्यसमाज सान्ताक्रूज से पिचहत्तर हजार रूपये का जो वेद-वेदांग पुरुस्कार मिला था उसे अपने निजी कार्यों में व्यय न कर उन पैसों को 7 खण्डों में प्रकाशित मीमांसा दर्शन के भाष्य के प्रकाशन में लगा दिया था जबकि उनके परिवार को उस समय धन की अतीव आवश्यकता थी।

 डा. ज्वलन्त कुमार जी ने कहा कि ऋषि के ग्रन्थों में ऐसी कोई बात नहीं है जिसकी पुष्टि वेद व ऋषियों के ग्रन्थों से न होती हो। उन्होंने कहा कि उनके बनाये आर्यसमाज के नियम व मान्यतायें ऋषियों के विचारों व वचनों का हिन्दी में अनुवाद मात्र हैं। इसके अनेक उदाहरण भी उन्होंने दियें। आर्यसमाज के नियम 1 व 3 से जुड़े ऋषियों के वचनों को उन्होंने प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा वेदों का मुख्य तात्पर्य ईश्वर के स्वरूप व गुणों का वर्णन करना है। ज्वलन्त जी ने डा. सत्यप्रकाश सरस्वती जी का भी उल्लेख कर बताया कि उन्होंने वेदों पर अपने एक अंग्रेजी ग्रन्थ में लिखा है कि सत्ता में यथार्थ, ज्ञान-कर्म-आनन्द में भी यथार्थ और ऐसी सत्ता जो अनन्त है, उसका नाम ईश्वर व मुख्य नाम ओ३म् है। ऋग्वेद के पुरुष सूक्त की चर्चा कर उन्होंने बताया कि यह ब्रह्माण्ड व समस्त लोक लोकान्तर ईश्वर की कुल अनन्त सत्ता के 1/4 भाग में विद्यमान हैं। शेष 3/4 में ईश्वर ही ईश्वर है जो अमृतमय और अनन्त है। ईश्वर वह है जो ज्ञान, कर्म व आनन्द में अनन्त है। आचार्य जी ने कहा कि जो विस्तार में परिमित, सत्ता में यथार्थ और ज्ञान-कर्म-आनन्द में अल्प है उसका नाम जीवात्मा है। उन्होंने कहा कि जीवात्मा प्रायः ईश्वर की ओर जाने के स्थान पर प्रकृति की ओर चला जाता है जो ज्ञान, कर्म व आनन्द से शून्य है।

अन्धविश्वासों की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि तिरुपति के प्रसिद्ध मन्दिर में भगवान की एक आंख पुरानी पड़ गई। उसे बदल कर उसके स्थान पर 2.5 करोड़ रूपये की लागत से हीरे की नई आंख लगाई गई है। जगन्नाथपुरी की चर्चा कर उन्होंने बताया कि वहां भगवान जगन्नाथ जी को हर वर्ष 14 दिन बुखार आता है जिसमें वह भोजन नहीं करते, बुखार दूर करने के लिए काढ़ा पीते हैं। आचार्य जी ने नैपाल के एक हनुमान मन्दिर की चर्चा भी की और बताया कि वहां हनुमान जी की मूर्ति पर अण्डा चढ़ाया जाता है। उन्होंने कहा कि मैंने वहां के लोगों से पूछा तो उन्होंने बताया कि इस मन्दिर का पुरोहित अण्डा खाता है इसलिए यहां अण्डा चढ़ाया जाता है। आचार्य जी ने इन कार्यों को अज्ञानता व पाखण्ड का सूचक बताया और आर्यसमाज का एक प्रसिद्ध भजन सुनाया जिसके बोल हैं ‘अजब हैरान हूं भगवन तुम्हे कैसे रिझाऊं मैं’। आचार्य जी ने कहा कि महाभारत युद्ध के बाद समूचे देश में अन्धकार छा गया था। इस कारण देश में सच्ची ईश्वरोपासना को भुलाकर मूर्तिपूजा की जाने लगी थी और मन्दिरों का निर्माण किया जाने लगा था। आचार्य जी ने कहा कि ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास में एक ईश्वर के 108 नामों की व्याख्या की है। अपने भाषण को विराम देते हुए उन्होंने कहा कि ऋषि दयानन्द ने देश व विश्व के सम्मुख वैदिक धर्म का वास्तविक स्वरूप रखा है।

 आर्यसमाज के पुरोहित श्री विद्यापति शास्त्री जी ने सामूहिक शान्तिपाठ कराया। इसके बाद आज आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव के प्रथम दिन का प्रथम सत्र समाप्त हुआ। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

ओ३म्

**“डा. ज्वलन्त कुमार शास्त्री और आचार्य आशीष दर्शनाचार्य जी की वैदिक साधन आश्रम तपोवन में शिष्टाचार भेंट”**

-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

आर्यजगत के उच्च कोटि के विद्वान व व्याख्यानदाता आचार्य डा. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी आजकल आर्यसमाज धामावाला देहरादून के 138वें वार्षिक उत्सव पर मुख्य व्याखानदाता के रूप में पधारे हुए हैं। आज 11.00 बजे प्रातःकालीन सत्र से निवृत होकर हम दोनों वैदिक साधन आश्रम तपोवन पधारे। वहां कार्यालय में आश्रम के मैनेजर एवं एक अन्य अधिकारी से वार्तालाप हुआ। उस समय आचार्य आशीष जी आश्रम के मुख्य सभागार में 7 दिवसीय ध्यान योग शिविर के लगभग 80 शिविरार्थियों को सम्बोधित कर रहे थे। कार्यक्रम अभी लगभग 1 घंटा और चलना था अतः इस अवकाश का लाभ उठाकर हम तपोवन आश्रम की 3 किमी. दूर पहाड़ियों पर स्थित तपोस्थली देखने चले गये जहां स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी निवास करते हैं और वर्ष में एक बार फरवरी-मार्च, 2017 के मध्य एक चतुर्वेद पारायण यज्ञ आयोजित करते हैं जो लगभग 40 दिनों तक चलता है। स्वामी जी वहां अन्य शिविर भी आयोजित करते हैं। हमने वहां भव्य यज्ञशाला, एक सभागार एवं ध्यान लगाने का स्थान देखा जहां महात्मा आनन्द स्वामी जी, महात्मा प्रभु आश्रित जी व अन्य महात्मा ध्यान लगाया करते थे। वहां हमें अलवर से आये एक साधक भी मिले। उनसे वार्तालाप किया और वहां से चलकर पुनः मुख्य तपोवन आश्रम स्थान पर आ गये जो पहाड़ियों की तलहटी पर स्थित है।

आश्रम में अभी आशीष आर्य जी का कार्यक्रम चल ही रहा था। लगभग 1.15 बजे अपरान्ह वह सम्पन्न हुआ। उसके बाद डा. ज्वलन्तकुमार शास्त्री जी और आचार्य आशीष जी ने अनेक विषयों पर चर्चा की। आचार्य ज्वलन्त कुमार जी ने बताया कि आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य जी अगस्त-सितम्बर, 2017 में उनसे इलाहाबाद में मिले थे। दोनों ने वार्तालाप किया था। अचानक 14 नवम्बर, 2017 को रोजड़ में आचार्य ज्ञानेश्वर जी उनकी मृत्यु हुई। आचार्य आशीष जी ने डा. ज्वलन्त कुमार जी को कहा कि वह लम्बा कार्यक्रम बनाकर तपोवन आश्रम में आयें और यहां रहकर साधको को सम्बोधित करने के साथ स्वयं भी साधना करें। आचार्य ज्वलन्त कुमार जी ने ऐसा करने की अपनी भी इच्छा जताई। डा. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी ने बताया कि उनको पाण्डुलिपियों पर कार्य करने का अनुभव है। उन्होंनें पीएचडी भी इसी विषय में किया है। वह चाहते हैं कि उन्होंने ऋषि दयानन्द जी की जन्म तिथि के निर्धारण में जैसा कार्य किया, एक पुस्तक लिखी, अब तक उसके तीन संस्करण प्रकाशित हो चुके व नया संस्करण प्रकाशित हो रहा है, ऐसा ही कार्य वह आगामी दिनों में आर्यसमाज की स्थापना तिथि के निर्धारण पर एक शोध पुस्तक लिखकर करें। इसके लिए उन्हें आर्यसमाज काकड़वाड़ी व अजमेर आदि स्थानों में लगभग 15-15 दिन बैठकर करना होगा। उन्होंने बताया कि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा ही आर्यसमाज की वास्तविक स्थापना तिथी है। इसी मान्यता को वह अपने शोध में सामने लायेंगे। आशीष जी से वार्तालाप समाप्त करके हम लोग दो पहिया वाहन से तपोवन आश्रम से आर्यसमाज धामावाला बाजार पहुंचे जहां आर्यसमाज के प्रधान जी श्री महेश चन्द्र शर्मा हमें मिले। उनसे संक्षिप्त वार्ता हुई। शास्त्री जी अपने कक्ष में विश्राम करने चले गये और हम भी अपने निवास की ओर चल पड़े। आश्रम में हमने आशीष जी और शास्त्री जी का चित्र लिया, उसे प्रस्तुत कर रहे हैं। आश्रम के ही कुछ अन्य चित्र भी प्रस्तुत है। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**ओ३म्**

**“सुप्रसिद्ध आर्य विद्वान डा. ज्वलन्त कुमार शास्त्री**

**और डा. नवदीप कुमार की भेंट”**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

आर्यसमाज धामावाला देहरादून का तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव कल दिनांक 24-11-2017 से चल रहा है। अब तक चार सत्र आयोजित हो चुके हैं। देहरादून के प्रसिद्ध विद्वान प्रोफेसर डा. नवदीप कुमार जी प्रत्येक आयोजन में समय से पूर्व उपस्थित होते हैं व कार्यक्रम की समाप्ति पर आचार्य डा. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी से भेंट व वार्तालाप कर लौटते हैं। आज सायं 5.00 बजे आयोजन की समाप्ति पर भी डा. शास्त्री और डा. नवदीप जी ने बैठकर लगभग आधा घंटे से अधिक समय तक अनेक विषयों पर चर्चा की। यह बता दें कि डा. नवदीप जी आर्यसमाज धामावाला के पुराने सदस्य हैं। आप देहरादून डी.ए.वी. स्नात्कोत्तर महाविद्यालय में राजनीति शास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष रहे हैं। आप आर्यसमाज के एक बहुत अच्छे प्रभावशाली व प्रमाणिक वक्ता भी हैं। हमने उनके कुछ व्याख्यान फेस बुक के माध्यम से प्रस्तुत किये हैं। समय समय डा. नवदीप कुमार जी आर्यसमाजों व अन्य मंचों से अपने व्याख्यान देते रहते हैं जिसके केन्द्र में महर्षि दयानन्द जी की विचारधारा का पोषण होने के साथ उनकी प्रामाणिकता को सिद्ध करना ही होता है। आपने एक शोध ग्रन्थ **‘‘क्रान्तिसूर्य महर्षि दयानन्द और उनके क्रान्तिकारी प्रमुख अनुयायी”** की भी रचना की है जिसका प्रकाशन हो चुका है। पूर्व संस्करण पूर्णतः समाप्त हो चुका है और नये संस्करण की प्रतीक्षा है। अभी किसी प्रकाशक ने उनकी पुस्तक के प्रकाशन की स्वीकृति नहीं दी है। इसके पुनर्प्रकाशन के लिए हम उन्हें प्रेरित करते रहते हैं। डा. नवदीपकुमार जी आर्यसमाज के प्रतिष्ठित विद्वान है। आर्यसमाज को उनकी अधिक से अधिक सेवायें लेनी चाहिये। इससे युवा वर्ग विशेषरूप से आकर्षित एवं प्रभावित हो सकता है। हमारा अनुभव है कि आर्यसमाज के अधिकारी महानुभाव आर्यां की योग्यता का सही मूल्यांकन नहीं कर पाते और न ही योग्य ऋषि भक्तों की सेवाओं का लाभ ही उठाना जानते हैं। देहरादून में यह स्थिति हमने सर्वत्र अनुभव की है। डा. नवदीप कुमार जी आर्यसमाज के देहरादून में होने वाले सभी विशेष कार्यक्रमों में अवश्य पधारते हैं एवं एक श्रोता के रूप में ध्यान से बैठकर विद्वानों को सुनते हैं। यह उनकी गुणग्राहकता का प्रमाण अनुभव होता है।

 कल दिनांक 24 नवम्बर, 2017 को आर्ष गुरुकुल, पौंधा के आचार्य डा. धनंजय आर्यसमाज के उत्सव में पधारे थे। इस अवसर पर आर्यसमाज ने शाल एवं ओ३म् का पट्टा ओढ़ाकर उनका सम्मान किया। इस अवसर का एक चित्र भी प्रस्तुत कर रहे हैं।

आज सायं डा. नवदीप कुमार जी और इन पंक्तियों का लेखक डा. ज्वलन्तकुमार शास्त्री जी के साथ उपस्थित थे। हमने डा. ज्वलन्त कुमार शास्त्री और डा. नवदीप कुमार का और डा. डा. नवदीप जी ने डा. ज्वलन्त जी के साथ हमारा एक चित्र लिया। यह भी प्रस्तुत कर रहे हैं। ओ३ण्म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**